नन्हा सिपाही - सैम

नन्हा सिपाही - सैम

लेखक : नाथानेईल
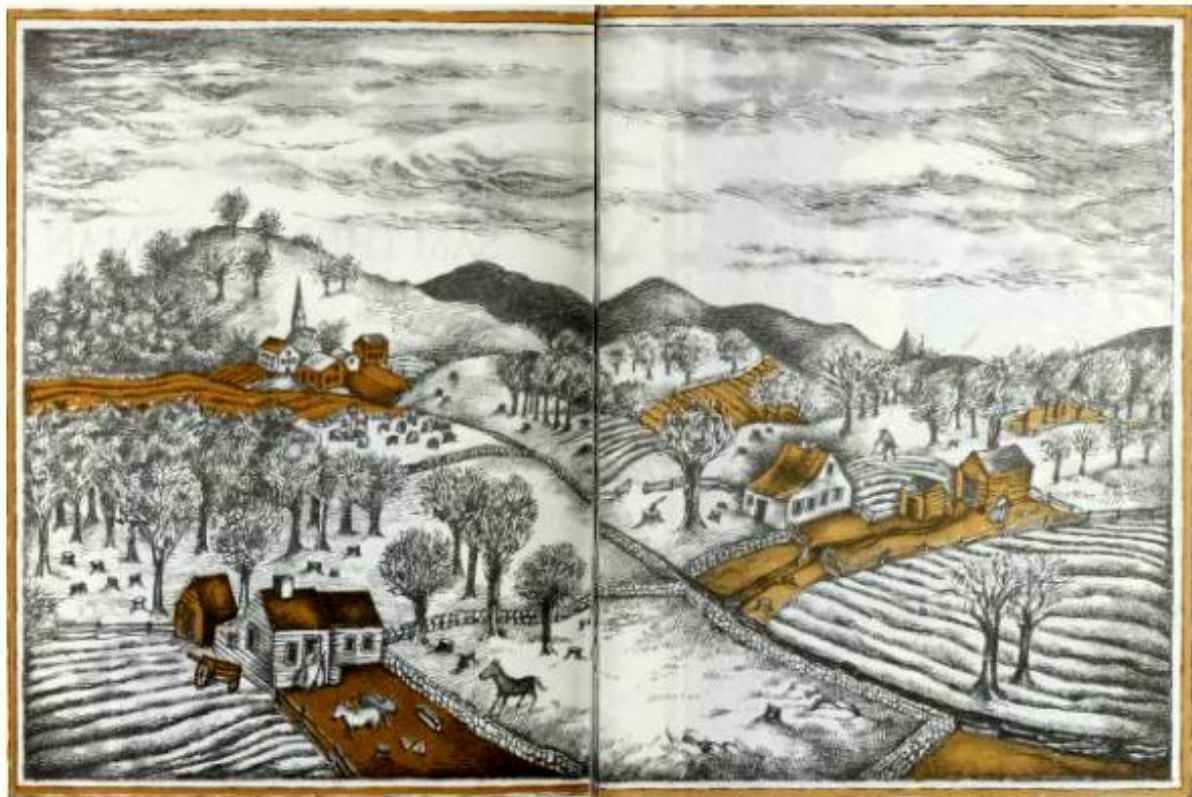
आज से करीब दो सौ साल पहले सैम ब्राउन नाम का एक छोटा लड़का अपने माँ-बाप के साथ लेक्सिंग्टन, मेसाचुसेट्स के एक फार्म पर रहता था.

उस समय अमरीका एक स्वतंत्र देश नहीं था. वो, इंग्लैंड के आधीन था.

सैम के माता-पिता का एक छोटा फार्म था.
खेत की ज़मीन भी बहुत पथरीली थी.

खेती के काम में सैम अपने
पिता की मदद करता था.

सैम की माँ दिन भर

घर पर काम करती थीं.

ज़रुरत की सब चीज़ें उन्हें

खुद उगानी पड़ती थीं,

या फिर अपने हाथों से

बनानी पड़ती थीं.

एक बार बोस्टन में सैम और उसके
पिता ने उन सैनिकों को देखा
जिन्हें अंग्रेज़ों ने वहां क़ानून
व्यवस्था बनाने के लिए भेजा था.
लोग, सैनिकों के बर्ताव और ख़ौफ़
से बहुत नाखुश थे.

इसलिए वहां अक्सर दंगे होते थे.
कुछ लोगों के पास बंदूकें और बम्ब भी थे.
सैनिकों के साथ लड़ाई में
वे उनका उपयोग करते थे.
स्थानीय लोगों को सैनिकों ने नफरत थी.
क्योंकि सैनिक, लाल कोट पहनते थे,
इसलिए लोग उन्हें "लॉबस्टर बैक"
के नाम से बुलाते थे.

घर लौटते वक्त सैम ने पूछा,

"वो सैनिक क्या चाहते हैं?"

"वो चाहते हैं कि हम ताकतवर न बनें

और हमेशा गुलाम बने रहें,"

पिताजी ने उत्तर दिया.

"वो हमसे डरते भी हैं."

"फिर तो हम बराबरी पर हैं," सैम ने कहा.

"पर मुझे उनसे डर लगता है."

फिर वसंत की एक रात

चर्च की घंटियां ज़ोर से बजने लगीं.

उनसे सैम की आँख खुल गई.

"घंटियां क्यों बज रही हैं?"

सैम ने सोचा, "आज इतवार तो नहीं हैं!"

फिर सैम ने खिड़की में से बाहर देखा.
अँधेरे में उसने लोगों को दौड़ते हुए देखा.
लोग सब दिशाओं में दौड़ रहे थे.

सैम को अपने माता-पिता की
आवाज़ भी सुनाई दी.
माँ, घबराई लग रही थीं.
सैम को कुछ गड़बड़ी का अंदाज़ ज़रूर हुआ.

सैम ने झटपट कपड़े पहने
और वो नीचे उतर कर आया.
"बाहर क्या हो रहा है?" उसने पूछा.
"तुम पलंग पर सोने जाओ," माँ ने कहा.
"नहीं," पिताजी ने कहा.
"हमें हर शख्स की ज़रुरत पड़ेगी."
उसके पिता मिनट-मैन थे,
यानि किसी दंगे में उन्हें एक मिनट
में तैयार होना पड़ता था.
"तुम अपनी बन्दूक लाओ, सैम"
पिताजी ने कहा.
"क्यों?" सैम ने पूछा.
"बाहर क्या हो रहा है?"

"किसी को भी पक्का नहीं पता,"
पिताजी ने कहा.
"अँगरेज़, बोस्टन छोड़ चुके हैं
और अब वे इस ओर आ रहे हैं."
"आपको यह किसने बताया?"
सैम ने पूछा.
सैम चाहता था कि
वो अफवाह गलत निकले.
"पॉल रिवरी ने मुझे बताया,"
पिताजी ने कहा.
"जाओ, अब अपनी बन्दूक लेकर आओ."

फिर सैम ने अपनी बन्दूक उठाई
और वो पिताजी के पीछे चला.
वो लोग अपने गांव के पेड़ों की हरियाली
में से अँधेरे में आगे बढ़े.

चर्च की घंटियां अभी भी बज रही थीं.
कहीं से ढोल बजने की
आवाज़ भी आ रही थी.
सैम को ठंड लग रही थी
और साथ में डर भी.

मिनट-मैन के मुखिया
कप्तान पार्कर ने
मीटिंग हॉल के पास सबको
लाइन में खड़े होने को कहा.
सैम को उसका दोस्त जॉन एलन भी दिखाई दिया.
जॉन की भी हालत बिल्कुल सैम जैसी ही थी.
जॉन को देखकर सैम को कुछ अच्छा लगा.
"ब्रिटिश यहाँ क्यों आ रहे हैं?" सैम ने पूछा.
"ब्रिटिश सैनिक, कॉनकॉर्ड में छिपी बंदूकें
और बारूद लूटने के लिए आ रहे हैं,"
जॉन ने सैम को बताया.
"कॉनकॉर्ड पहुंचने के लिए
उन्हें हमारे गांव से गुज़रना होगा."

धीरे-धीरे रात ढलने लगी.
आसमान में हल्की रोशनी छाने लगी.
फिर बिल्कुल सन्नाटा छा गया.
सैम को पेड़ों पर चिड़ियों का
कलरव सुनाई देने लगा.
अब वो सेब के फूलों की खुशबू
सूंघ सकता था.

वो घास पर ओस की बूंदे
महसूस कर सकता था.
"यह भी हो सकता है ब्रिटिश सैनिक
यहाँ न आएं," सैम ने जॉन से कहा.
"हो सकता वो किसी और रास्ते से जाएँ."
"क्या पता," जॉन ने कहा.
"पर यह काफी नामुमकिन है."

फिर सुबह हुई
तब सब आदमी आराम करने लगे.
कुछ लोग जम्हाई भरने लगे.
सैम के पिता अपने
मित्रों से बातचीत करने लगे.
सैम और जॉन घास में
खेल खेलने लगे.
सैम को अब ज़ोर की भूख
लगने लगी थी.
तभी जॉन ने इशारे से कहा,
"सुनो!"

उन्होंने ध्यान से सुना.

दूर से उन्हें पैरों के मार्च करने

की आवाज़ सुनाई दी.

लेफ्ट...राइट...लेफ्ट...

लेफ्ट...राइट...लेफ्ट...

और फिर ...

पहाड़ी के ऊपर होकर

और शराबखाने को पार करके

ब्रिटिश सैनिक वहां आये!

वो एक लम्बी कतार में आए,

सैम उनके लाल कोट देख सकता था.

सैम उनके कंधों पर टिकी चमकीली

बंदूकें भी देख सकता था.

वो एक लम्बी चमकीली

लाल नदी जैसे दिख रहे थे.

जैसे-जैसे वो नज़दीक आये
कप्तान पार्कर ने उन्हें गिनने की कोशिश की.
शायद उनकी संख्या हज़ार से ज़्यादा होगी.
और कप्तान पार्कर के पास
सिर्फ अस्सी सिपाही थे.
"उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है," कप्तान ने कहा.

"चलो, अब हम लोग यहाँ से चलते हैं,"
"मैं भी इसके पक्ष में हूँ," सैम ने कहा.
"अब मैं घर जाऊँगा," सैम ने कहा.
"मैं भी," जॉन ने कहा.
"यहाँ हम कुछ नहीं कर पाएंगे."

कुछ देर बाद सैम और जॉन और उनके पिता
और बाकी सिपाही भी वहां से जाने लगे.
"मैं नाश्ते के बाद तुमसे मिलूंगा,"
सैम ने जॉन से कहा.
तभी उसे एक ब्रिटिश अफसर दिखा,
वो ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था
और कुछ आर्डर दे रहा था.
"पता नहीं वो क्या चाहता है," सैम ने कहा.
"वो हमें यहाँ से जाने को कह रहा है,"
जॉन ने बताया.
"फिर मैं यहाँ से तेज़ी से घर जाता हूँ,"
सैम ने कहा.
"पर वो इस तरह चिल्ला क्यों रहा है."
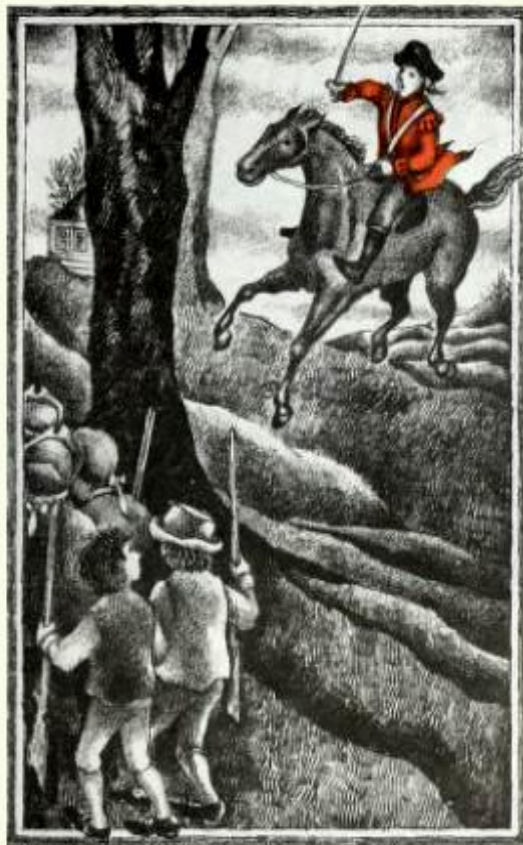
तभी कहीं से, किसी ने
अपनी बन्दूक चलाई - धायं!
उसके बाद ब्रिटिश सैनिकों ने
अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कीं.

फिर मिनट-मैन
ज़ख़्मी होकर गिरने लगे.
"सैम!" जॉन चिल्लाया, "मुझे गोली लगी है."
फिर जॉन अपना पैर पकड़कर नीचे गिरा.
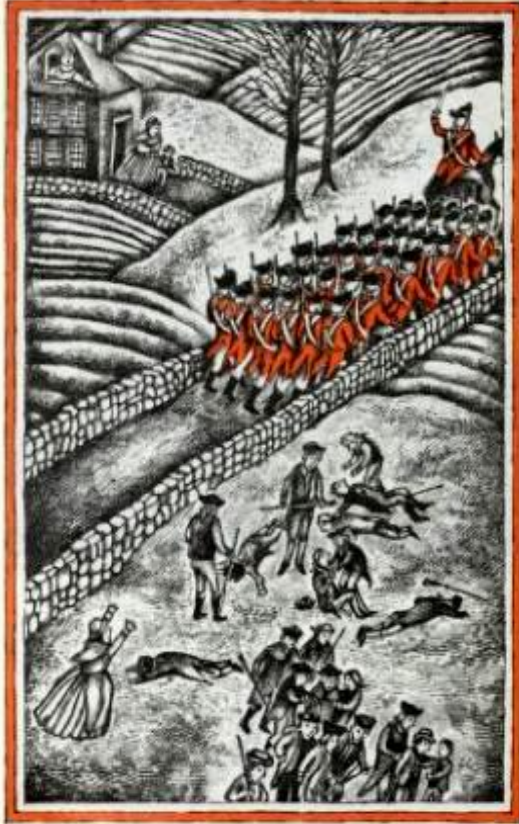
उसके बाद ब्रिटिश अफसर ने

सैनिकों द्वारा गोलीबारी बंद करवाई

और उन्हें वापिस एक लाइन में चलने को कहा.

अफसर उन्हें कॉनकॉर्ड की तरफ लेकर चला.

तब तक आठ मिनट-मैन शहीद हो चुके थे.

सैम और उसके पिता ने

जॉन के पिता की मदद की.

वे जॉन को घर लेकर गए.

सैम को लगा जैसे उसने कोई बुरा सपना देखा हो.

पैर की मलहम-पट्टी करते समय सैम ने

जॉन की माँ को रोते हुए देखा.

"तुम्हें कैसा लग रहा है?" सैम ने पूछा.

"ठीक नहीं," जॉन ने उत्तर दिया.

पिताजी ने अपने मुंह की धूल धोते हुए
सैम से कहा, "चुप रहो.
क्या पता, तुम्हें यह मौका मिल ही जाए."
"वो ऐसा नहीं करेगा," सैम की माँ ने कहा.
" अब मैं उसे घर से निकलने ही नहीं दूँगी."

कुछ देर बाद सैम और उसके पिताजी
अपने घर वापिस लौटे.
तब तक सैम का डर, गुस्से में बदल गया था.
"उनकी यह करने की ज़ुर्रत कैसे हुई,“
वो गुस्से में चिल्लाया.
"अगर ब्रिटिश सैनिक फिर वापिस आये
तो मैं उन्हें गोली मार दूंगा - हरेक को!"

इत्तिफाक से कुछ देर बाद

ब्रिटिश सैनिक दुबारा वापिस लौटे.

देखो, सैनिक वापिस आ रहे हैं!

"सैम, तुम यहीं घर पर रहना," माँ ने कहा.

पर तब तक सैम अपनी बन्दूक उठाकर

घर से बाहर दौड़कर जा चुका था.

सैम के पिता भी उसके पीछे-पीछे गए.

इस बीच वहां आसपास के गावों के
बहुत से किसान इकट्ठे हो गए थे.
वो जाते हुए ब्रिटिश सैनिकों पर
गोलियां चला रहे थे.
वो ब्रिटिश सैनिकों के पास नहीं गए.
पर वे दूर, पत्थरों की और पेड़ों की आड़
में से गोलियां चला रहे थे.
यह मुंह-दर-मुंह लड़ाई से बेहतर था.

कुछ देर बाद बोस्टन से
कुछ और ब्रिटिश सैनिक आये.
फिर काफी घमासान लड़ाई हुई.

ब्रिटिश सैनिकों ने
कई किसानों के घर जलाए.
पर ऐसा करने का उनका मन नहीं था.

कुछ समय बाद ब्रिटिश सैनिक
बोस्टन की ओर वापिस मुड़े.
पर तब तक उन्हें किसानों
ने सब तरफ से घेर लिया था.
किसान उनपर लगातार गोलियां चला रहे थे.

उस रात बहुत देर बाद ही
सैम और उसके पिता घर लौटे.
उस समय हल्की-हल्की बारिश हो रही थी.

"तुम लोग इतनी देर कहाँ थे?"
सैम की माँ ने पूछा.
"मैं दिन भर बहुत परेशान रही."

पर सैम बहुत थका हुआ था.
वो उत्तर देने की हालत में नहीं था.
वो अब सिर्फ सोना चाहता था.
उस समय किसी को यह बात पता नहीं थी
पर उसी दिन अमरीकी-क्रांति शुरु हुई थी.
वो युद्ध पूरे आठ साल चला.
अंत में अमरीका एक स्वतंत्र देश बना.
पर सैम उससे इतना फर्क नहीं पड़ा.
उसे अपने मित्र जॉन की ज़्यादा परवाह थी.

उसके बाद सैम को नींद आ गई.

समाप्त